चण्डीगढ़। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अचल दीदी के चौथे स्मृति दिवस पर टैगोर थियेटर में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. रजनी,जापान, ब्र.कु. मीरा,मलेशिया, ब्र.कु. हेमलता,त्रिनिदाद, ब्र.कु. अमीरचंद तथा अन्य। कार्यक्रम में शरीक हुए पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट की न्यायाधीश दया चौधरी, जस्टिस ए.एन. जिंदल, हरियाणा के एडिशनल चीफ सेक्रेट्री टी.सी. गुप्ता, चण्डीगढ़ के मेयर तथा अन्य गणमान्य लोग।

आगरा-कमला नगर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जनकपुरी महोत्सव में आयोजित त्रिदिवसीय भव्य देव देवियों की झाँकी एवं आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् विजय नगर कॉलोनी की पार्षद नेहा गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शील बहन।

बहल-हरियाणा। 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के अंतर्गत पटवार खाने में साफ सफाई करने के पश्चात् पौधे लगाते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुन्तला, ओमप्रकाश लाखलान, समशेर चौकीदार, रामसिंह शेरला तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। नवरात्रि के पावन पर्व पर चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् महापौर रोशनी तिर्की को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. हर्षा। साथ हैं ब्र.कु. तृप्ति।

जोधपुर-राज.। नवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् बार एसोसिएशन प्रेसीडेंट एवं सीनियर एडवोकेट रणजीत जोशी को ईश्वरीय साहित्य एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. फूल बहन तथा ब्र.कु. शील बहन।

हाथरस-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में थानाध्यक्ष विनीत सिरोही, पुलिस सब इंस्पेक्टर्स, ब्र.कु. शांता, ब्र.कु. कोमल, मनोज भाई तथा गजेन्द्र भाई।

प्रसन्नता

बीमार होने पर हम दवाई खाते हैं। दवाई और कुछ नहीं किसी न किसी पेड़, पौधे या जड़ी बूटी का सूक्ष्म रूप है। दवाई को शक्तिशाली बनाने के लिए भी संकल्प शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। आप जो दवाई खाते हैं उस दवाई के लिफाफे को अपने पूजा के कमरे में रखो और भगवान को याद करो आप शांति के सागर हैं...शांति के सागर हैं। भगवान की याद से दवाई शक्तिशाली बन रही है। आपके यह संकल्प उन सब पौधों को भी जा रहे हैं, जिनसे दवाई बनी हुई है। इस तरह उन पौधों से भी तरंगें वापिस दवाई में आयेंगी। आध्यात्मिक नियम यह कहता है कि किसी भी वस्तु के चाहे कितने भी छोटे टुकड़े कर दिये जायें, वह उस वस्तु से सूक्ष्म में जुड़ा रहता है जिससे वह पैदा हुआ है। जब इस छोटे से छोटे टुकड़े को हम किसी प्रकार के संकल्प देते हैं तो वह उसके स्रोत को भी पहुंचते हैं।

आज के समय में वृक्ष को भी देवताओं की जड़ मूर्तियों की भांति पूजा जाता है, क्योंकि पेड़-पौधे हमें ऊर्जा देते हैं। पर ये बात वो लोग नहीं जानते, बस पूजते हैं और अपनी मनोकामनायें मांगते हैं और पूरी होने पर खुश हो जाते हैं। वो नहीं जानते कि उनके द्वारा किए हुए शुद्ध संकल्प पेड़ पौधों तक पहुंचते हैं, फिर वो उन संकल्पों को ब्रह्माण्ड में प्रसारित करते हैं। उसी अनुसार फिर ब्रह्माण्ड उनको पूरा कर देता है। अब हम वहाँ चलते हैं जिनको दुनिया में भगवान का दर्जा दिया जाता है। जब हम बीमार होते हैं तो डॉक्टर से दवाई लेते हैं और जो दवाई वो हमें देते हैं वो कैसे बनती हैं और कैसे उनसे हम ठीक होते हैं? जिन पेड़ों की हम पूजा करते हैं वो दवाई के रूप में हमें अपनी एनर्जी देते हैं। इनसे दवाइयां बनाई जाती हैं। आपने कई बार देखा होगा कि दो व्यक्ति एक ही बीमारी की एक ही जैसी दवाई खाते हैं तो एक तो जल्दी ठीक हो जाता है और दूसरे को वक्त लगता है। इसका भी एक लॉजिक है, क्योंकि वो दवाई लेते वक्त हम जो संकल्प करेंगे वो संकल्प उन दवाइयों द्वारा उन पेड़ों तक पहुंचते हैं जिनसे वो बनी है और जैसा आप संकल्प करते हैं वैसी ही एनर्जी वो पेड़, दवाई द्वारा हम तक पहुंचाते हैं। इसका मतलब क्या हुआ? मतलब एकदम साफ है कि हम जब भी कोई दवाई खायें तो उन्हें शुद्ध संकल्प देकर ही खाएं, वरना जैसे संकल्प होंगे वैसी ही एनर्जी हम तक आयेगी।

इस तरह दवाई को संकल्प देने से वह तो शक्तिशाली बनती ही है, परंतु ब्रह्माण्ड में उसके पौधे जिससे वह दवाई बनी है वह भी शक्तिशाली बनते हैं। अगर आप पूजा के लिए समय नहीं निकाल सकते हैं तो आप कहीं पर भी बैठे हुए या चलते हुए दवाई को कल्पना में देखते रहो और कल्पना में इष्ट को देखते हुए उसके गुण, आप शांति के सागर हैं, को दोहराते रहो। इससे भी दवाई में ईश्वरीय शक्ति भर रही है। इस विधि से, तरंगित दवाई लेने से आप बहुत जल्द रोग मुक्त होंगे। जब आप बीमार होते हैं और डॉक्टर के पास जाते हैं, उस समय भगवान को याद करते रहो। जब डॉक्टर आपको देख रहा हो, उस समय उसे विशेष रूप से मानसिक तरंगें देते रहो। भगवान डॉक्टर की रोग को परखने की शक्ति बढ़ा देगा और वह सही और सस्ती दवाई देगा जिससे आप जल्दी ठीक हो जायेंगे।

आपके शरीर के जिस भाग में रोग है, जो लोग स्वस्थ हैं उनके उस भाग पर तरंगें देते रहा करो। खासतौर पर जवान बच्चों के अंग शक्तिशाली होते हैं। उनके उस भाग पर तरंगें देने से आप अच्छा महसूस करेंगे और आपका रोग जल्दी ठीक होगा।

सूक्ष्म आत्मा शरीर को कैसे चलाती है?

विज्ञान कहता है कि मनुष्य का शरीर उसके दिमाग के द्वारा नियंत्रित होता है। मनुष्य के दिमाग से सूक्ष्म विद्युत तरंगें शरीर के हर अंग तक पहुंचती हैं। मनुष्य का दिमाग दिन में लगभग 100 वॉट्स बिजली खर्च करता है। यह बिजली इतनी है जिससे एक छोटा बल्ब जल सकता है। परंतु विज्ञान यह नहीं समझ पा रहा कि जो दिमाग सिर्फ एक मांस का गोला है, उससे यह सूक्ष्म एनर्जी कैसे निकलती है। वास्तव में उस मस्तिष्क में बैठी हुई अति सूक्ष्म चैतन्य बिंदुरूप आत्मा द्वारा ये ऊर्जा निरंतर प्रवाहित होती रहती है। शरीर में फैली बाल से भी पतली नसों और धमनियों का जाल इतना विशाल बिछा हुआ होता है जिसे अगर एक सीधी लाइन में रखा जाए तो वो इतनी लंबी होगी जिससे पूरी पृथ्वी को कई बार घेरा लगा सकती है। इन बालों से भी बारीक नसों और धमनियों से निरंतर सूक्ष्म विद्युतीय तरंगें और खून बहता रहता है।

दिमाग के मध्य में बैठी अति सूक्ष्म बिंदुरूप चैतन्य आत्मा से इन्हीं सूक्ष्म तरंगों द्वारा ही शरीर के हर अंग तक सिग्नल पहुंच जाता है। जिसके माध्यम से ही मुख द्वारा बात की जाती है, आँखें प्रति मि.ली. सेकेंड आस -पास की इमेज खींचकर दिमाग के बीच बैठी आत्मा तक भेजते रहते हैं। इसी से आवाज़ की सूक्ष्म तरंगों को भी आत्मा कैच करती है। इसी से ही आत्मा मुख द्वारा हँसती है, बोलती है, हाथ-पैर हिलाती है। इन्हीं तरंगों द्वारा आत्मा को स्वाद का, सुगंध का, दर्द का और स्पर्श इत्यादि का पता चलता

है। यह सूक्ष्म एनर्जी निरंतर हमारी आँखों, हाथ-पैर और रोम-रोम से आस-पास के वायुमंडल में प्रवाहित होती रहती है।

हम आत्माओं का सूक्ष्म आकारी प्रकाशमय विद्युतीय शरीर, हमारे हड्डी मांस के शरीर की हर एक यानी अरबों, खरबों पेशियों से जुड़ा होता है। जिसके ही कारण किसी का हल्का सा स्पर्श भी हमें तुरंत पता चल जाता है। पाँच तत्वों में फैली चुम्बकीय शक्ति के साथ भी हम आत्माएं कनेक्टेड होती हैं। हम जैसे कर्म करते हैं, जैसे संकल्प करते हैं, उन सकंल्पों से निकलती पॉज़ीटिव या नेगेटिव ऊर्जा अनुसार प्रकृति हम तक सुख अथवा दु:ख की परिस्थितियां या अच्छा स्वास्थ्य, रोग बीमारी भेजती रहती है। आत्मा में जैसी भी अच्छी या बुरी एनर्जी भरी हुई होती है उसी प्रकार से उसके स्थूल शरीर के अंगों का भी विकास होता है।

हम आत्माओं के अंदर भी इनबिल्ट ही एक हाई क्वालिटी कैमरा, कैलक्यूलेटर, दिशादर्शक यंत्र(कंपास), मोबाइल, टॉर्च, मैसेंजर, एंटी वायरस, ऑडियो, वीडियो, इमेज रिकॉर्डर, अनलिमिटेड जी.बी. का मेमोरी कार्ड इत्यादि होता है। जिस सूक्ष्म एनर्जी के ज़रिये इतनी सूक्ष्म आत्मा इतने बड़े भारी शरीर से कार्य करवाती है। उन्हीं सूक्ष्म तरंगों द्वारा आत्मा धरती से इतनी दूर परमधाम में बैठे बिंदुरूप चैतन्य शिव पिता के साथ भी कनेक्ट हो जाती है और स्वयं की डिस्चार्ज बैटरी को चार्ज करती है। साथ ही साथ परमात्मा पिता द्वारा भरी इस एनर्जी को सर्वत्र प्रवाहित कर संसार की अन्य आत्माओं को भी रिचार्ज करती है।

आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अर्बुदा गर्ल्स हाई स्कूल में 'नैतिक शिक्षा का महत्व एवं चरित्र निर्माण' विषय पर कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. नीतेश। साथ हैं प्राचार्या सुरभि सिंघल तथा अन्य शिक्षक एवं विद्यार्थीगण।

अररिया-बिहार। 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के अंतर्गत ओम शांति रोड से लेकर मुख्य मार्ग, रेलवे स्टेशन, थाना तथा सब्जी मंडी आदि स्थानों की साफ सफाई करते हुए ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. शकुंतला, नगर परिषद चेयरमैन रितेश राय तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।